शोध मंथन Vol. XIV No.III June-Sep. 2023 ISSN: (P) 0976-5255 (e) 2454-339X
Available at: *http:/shodhmanthan.anubooks.com*

भूमि उपयोग प्रतिरुप संत कबीर नगर जनपद (उ०प्र०) का भौगोलिक अध्ययन

प्राप्तिः 03.09.2023
स्वीकृतः 17.09.2023

72

कृष्ण मोहन मौर्य
शोधार्थी, भूगोल विभाग
दीनदयाल उपाध्याय, गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर
ईमेलः *krishnamaurya112@gmail.com*

सारांश

किसी क्षेत्र का भूमि उपयोग वहाँ के प्राकृतिक एवं सांस्कृतिक संयोग का प्रतिफल है कृषि भारतीय अर्थव्यवस्था की मजबूत रीढ़ है। आधुनिक वैज्ञानिक युग में सभी उपलब्ध संसाधनों के अनुकूलतम उपयोग को ध्यान में रखते हुए सतत् नवीन तकनीकी ज्ञान एवं संयत्रों का अनुसंधान एवं विकास किया जा रहा है, भूमि उपयोग भी इसी वैज्ञानिक युग की उपलब्धियों से पूर्णतया प्रभावित है। जब तक किसी क्षेत्र विशेष में भूमि प्रकृति–प्रदत्त विशेषताओं के अनुरुप रहता है अर्थात् मानवीय क्रिया–कलाप प्राकृतिक कारकों द्वारा निर्धारित होते हैं। तब तक भूमि का आर्थिक महत्व कम एवं जीवन स्तर निम्न होता है। कालक्रम के बाद जब भूमि उपयोग प्रारुप के निर्धारण में मानवीय भूमिका निर्णायक हो जाती है तो भूमि उपयोग में आर्थिक संसाधनों का विनियोजन अधिक होता है उस अवस्था में भूमि की संसाधनता में वृद्धि हो जाती है और जनजीवन का आर्थिक स्तर अपेक्षाकष्त उच्च हो जाता है।

प्रस्तुत अध्ययन द्वितीयक ऑकड़ों के विश्लेषण पर आधारित है। अध्ययन का उद्देश्य जनपद में भूमि उपयोग प्रतिरुप तथा कृषि विकास के अन्तर्सम्बन्धों के परिदृश्य को प्रस्तुत तथा विश्लेषण करना है। इसके साथ ही यह अध्ययन जनपद के भूमि उपयोग एवं कृषि विकास की वर्तमान स्थिति एवं भविष्य की सम्भावनाओं को प्रकाशित करने का भी एक प्रयास है।

मुख्य बिन्दु

विनियोजन, अनुकूलतम उपयोग, संसाधनता, अन्तर्सम्बन्ध।

प्रस्तावना

विकासशील देशों की अर्थव्यवस्था का मूल आधार कषि है भारत में करीब तीन–चौथाई जनसंख्या कृषि पर निर्भर है। यहाँ कृषि विकास का स्वरुप स्थानीय वितरण में विविधता पूर्ण दृष्टि गोचर होती है। यहाँ कृषि विकास का अर्थ कृषि उत्पादकता एवं वृद्धि से लगाया जाता है जो भूमि उपयोग की क्षमता पर निर्भर है कृषि सभी उद्योगों की जननी है जो मनुष्य को जीवन प्रदान करती है कृषि कार्य का मुख्य आधार भूमि संसाधन है अर्थात् भूमि संसाधन का नियोजित ढंग से उपयोग करना अति आवश्यक है। वारलोव (1961) के अनुसार ' इस प्रकार यह मांग और आपूर्ति तत्वों का अन्तर्सम्बन्ध ही है जो किसी भी स्थान के भूमि उपयोग में भौतिक तथा जैविक ढाँचे द्वारा प्रस्तुत होता

है[1]।' स्टाम्प (1961) ने 'क्षेत्रीय उच्चावच, जलवायु, मिट्टी एवं वनस्पति आदि के प्रयोग के आधार पर भूमि उपयोग को तीन वर्गो में विभाजित किया है[2]। प्रो. मिश्र (1968) के अनुसार 'कृषि विकास का तात्पर्य कृषि हेतु नई दशाओं का परिवर्धित अनुकूलन एवं उनकी अन्तर्निहित सम्भावनाओं का पूर्ण विकास है। कृषि विकास की समस्याएं मात्र वर्तमान उत्पादन हेतु नयी तकनीकी लाने की नहीं बल्कि इसके संरचनात्मक आधार में परिवर्तन की भी है[3]।

उपरोक्त तथ्यों को ध्यान में रखते हुए प्रस्तुत अध्ययन में प्रयास किया गया है कि कृषि विकास एवं भूमि उपयोग के अनेक पक्षों से सम्बन्धित सूचनाओं के आधार पर अध्ययन क्षेत्र में कृषि विकास स्तर के मापन एवं समान कृषि विकास स्तर वाले क्षेत्रों की पहचान की जा सके तथा क्षेत्र के सम्यक् विकास हेतु एक नियोजित कृषि विकास प्रारुप प्रस्तुत किया जा सके।

अध्ययन क्षेत्र :– अध्ययन क्षेत्र मध्य गंगा मैदान के समतल भू–भाग में अवस्थित है इसका भौगोलिक विस्तार 26°31' उत्तर से 27° उत्तर तथा 82°45' पूर्व से 83°15' पूर्वी देशान्तर के मध्य स्थित है इसके उत्तर में सिद्धार्थनगर, महराजगंज पूर्व में गोरखपुर दक्षिण में अम्बेडकर नगर तथा पश्चिम में बस्ती जनपद से घिरा है। इसका कुल क्षेत्रफल 1646.00 वर्ग किमी. तथा यहां की कुल जनसंख्या जनगणना 2011 के अनुसार 17,14,300 है। घाघरा, ं, राप्ती, आमी यहां की प्रमुख नदियां है। 5 सितम्बर 1997 को बस्ती एवं सिद्धार्थनगर जिले के पुनर्गठन के बाद यह जनपद अस्तित्व में आया तथा यहां की साक्षरता 2011 के अनुसार 66.72 प्रतिशत है। अध्ययन क्षेत्र में जनसंख्या के उदरपूर्ति हेतु कृषि उत्पाद की ग्रामीण जनसंख्या के आर्थिक स्थिति में सुधार एवं जीवन स्तर को ऊँचा करने में सेवा केन्द्रों की महत्वपूर्ण भूमिका है।

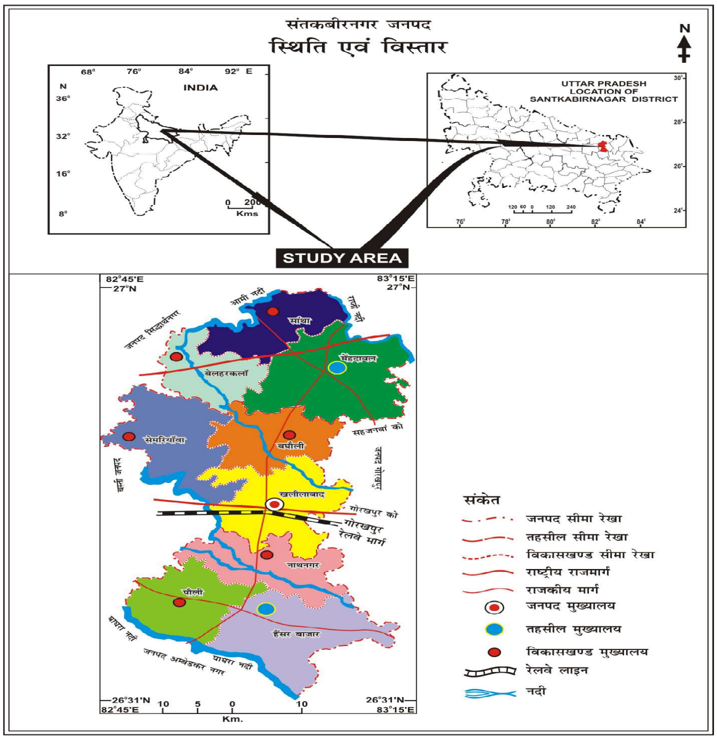
संतकबीरनगर जनपद
स्थिति एवं विस्तार
N
INDIA
68° 76° 84° 92° E
36° 32° 16° 8°
0 200 Kms
UTTAR PRADESH
LOCATION OF
SANTKABIRNAGAR DISTRICT
120 60 0 120 240
76° 78° 80° 82° 84°
30° 28° 26° 24°
STUDY AREA
82°45'E 27°N
83°15'E 27°N
आमी नदी
राप्ती नदी
जनपद सिद्धार्थनगर
सांथा
मेंहदावल
बेलहरकलाँ
सेमरियाँवा
बघौली
सहजनवां को
जनपद गोरखपुर
बस्ती जनपद
खलीलाबाद
गोरखपुर को
गोरखपुर रेलवे मार्ग
नाथनगर
पौली
हैंसर बाजार
घाघरा नदी
जनपद अम्बेडकर नगर
26°31'N 82°45'E
26°31'N 83°15'E
10 5 0 10
Km.
संकेत
जनपद सीमा रेखा
तहसील सीमा रेखा
विकासखण्ड सीमा रेखा
राष्ट्रीय राजमार्ग
राजकीय मार्ग
जनपद मुख्यालय
तहसील मुख्यालय
विकासखण्ड मुख्यालय
रेलवे लाइन
नदी

उद्देश्य :– प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य अध्ययन क्षेत्र में भूमि उपयोग प्रतिरुप को स्पष्ट करना है जिससे कि भूमि संसाधन का कुशलतम उपयोग किया जा सके तथा जनसंख्या की उदरपूर्ति एवं आर्थिक स्थिति में सुधार तथा जीवन स्तर को ऊंचा करने में मदद मिल सके एवं क्षेत्र में समन्वित विकास सम्भव हो सके।

ऑकड़ों का स्रोत एवं विधितंत्र :– प्रस्तुत अध्ययन पूर्णतः द्वितीयक ऑकड़ों पर आधारित है। विभिन्न प्रकार के ऑकड़े एवं सूचनायें प्रकाशित स्रोतों से लिए गये हैं। कृषि भूमि उपयोग से सम्बन्धित सूचनाएं जनपद से सांख्यिकीय पुस्तिका द्वारा प्राप्त कर उनका विश्लेषण किया गया है।

भूमि उपयोग प्रतिरुप :– अध्ययन क्षेत्र कृषि प्रधान अर्थव्यवस्था पर आधारित है जनसंख्या वृद्धि के परिणामस्वरुप एवं अन्य कारकों के प्रभावशाली होने पर एक ऐसी स्थिति आ जाती है कि कृषि क्षेत्र अधिकतम एवं अन्य अकृषित क्षेत्र न्यूनतम हो जाता है। इसके साथ ही अकृष्य एवं बंजर भूमि क्षेत्र का अधिकतम उपयोग होने लगता है जिससे कृषि के अतिरिक्त अन्य प्रकार के भूमि में वृद्धि होने लगती है तब यह स्थिति भूमि उपयोग की सफलता का द्योतक है अनेक कारको के प्रभावशाली होने पर कृषि भूमि क्षेत्र एव बंजर भूमि क्षेत्र वर्तमान समय में बढ़ते हुए नगरीय क्षेत्र में परिवर्तित होते जाते है आदर्श भूमि उपयोग वह अवस्था होती है जिसमें प्रति इकाई भूमि से अधिकतम लाभ प्राप्त होता है। जनपद में भूमि उपयोग सम्बन्धी तथ्यों का विश्लेषण निम्नलिखित तालिका द्वारा स्पष्ट है–

संत कबीर नगर जनपद : भूमि उपयोग प्रतिरुप

भूमि उपयोग प्रतिरुप	क्षेत्रफल (हे० में)	क्षेत्रफल (% में)	क्षेत्रफल (हे० में)	क्षेत्रफल (%में)
	2016–2017		2021–2022	
वन भूमि	4359	2.58	4361	2.57
कृषि योग्य बंजर भूमि	1638	0.97	2175	1.28
परती भूमि	14089	8.34	4963	2.92
ऊसर एवं कृषि अयोग्य भूमि	1806	1.06	1695	0.99
चारागाह	110	0.07	884	0.52
उद्यान कृषि	1925	1.14	3211	1.89
शुद्ध कृषि क्षेत्र	114719	67.94	121056	71.39
अन्य उपयोग की भूमि	30202	17.88	31208	18.40
योग	**168848**	**100**	**169553**	**100**

स्रोतः जिला सांख्यिकीय पत्रिका के आधार पर परिगणित।

तालिका से स्पष्ट है कि अध्ययन क्षेत्र में भूमि उपयोग प्रतिरुप में निरन्तर परिवर्तन होता आ रहा है इसके फलस्वरुप जनपद में भूमि उपयोग के अन्तर्गत सम्मिलित क्षेत्र का महत्व निरन्तर बढ़ता जा रहा है वर्ष 2016–17 में भूमि उपयोग प्रतिरुप के अन्तर्गत कुल क्षेत्रफल 168848 हेक्टेयर था जिसके अन्तर्गत 4359 हेक्टेयर वन भूमि, 1638 हेक्टेयर कृषि योग्य बंजर भूमि, 14089 हेक्टेयर परती भूमि, 1806 हेक्टेयर ऊसर एवं कृषि अयोग्य भूमि, 110 हेक्टेयर चारागाह, 1925 हेक्टेयर उद्यान कृषि, 114719 हेक्टेयर शुद्ध कृषि क्षेत्र एवं 30202 हेक्टेयर अन्य उपयोग की भूमि थी। जबकि 2021–2022

के दौरान यह भूमि उपयोग परिवर्तित होकर कुल प्रतिवेदित क्षेत्र बढ़कर 169593 हेक्टेयर हो गया जिसके अन्तर्गत 4361 हेक्टेयर वन भूमि, 2175 हेक्टेयर कृषि योग्य बंजर भूमि, 4963 हेक्टेयर परती भूमि, 1695 हेक्टेयर ऊसर एवं कृषि अयोग्य भूमि, 884 हेक्टेयर चारागाह, 3211 हेक्टेयर उद्यान कृषि, 121056 हेक्टेयर शुद्ध कृषि क्षेत्र एवं 31208 हेक्टेयर अन्य उपयोग की भूमि जो कि गत वर्ष की तुलना में वृद्धि दर्ज की गयी।

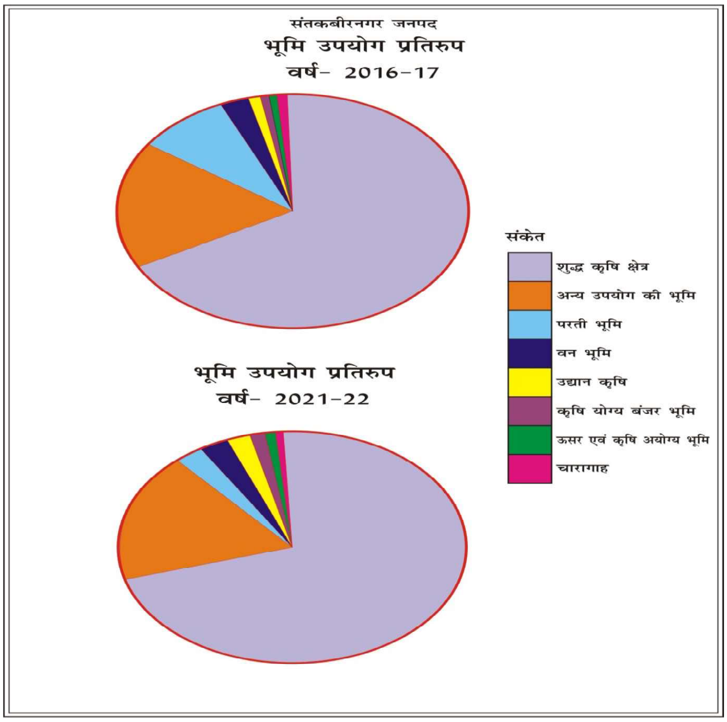

इस प्रकार स्पष्ट है कि अध्ययन क्षेत्र में कुल प्रतिवेदित क्षेत्र का सर्वाधिक भाग 71.39 प्रतिशत भाग पर कृषि कार्य किया जाता है। भूमि संसाधन एवं फसल उत्पादन में प्रत्यक्ष सम्बन्ध होता है। जनपद में भूमि उपयोग प्रतिरुप के अन्तर्गत सर्वाधिक भूमि शुद्ध कृषि क्षेत्र के अन्तर्गत सम्मिलित है इसके साथ ही जनपद के कुल प्रतिवेदित क्षेत्र का लगभग 3.91 प्रतिशत भूमि पर परती एवं कृषि अयोग्य भूमि का विस्तार है जो अनुपजाऊ होने के कारण कृषि कार्य हेतु प्रयोग में नहीं लायी जाती है। अतः इस प्रकार के भूमि उपयोग को नियोजित करके कृषि कार्य के लिए उपयोग में लाया जा सकता है जिससे फसल उत्पादन में वृद्धि तथा खाद्यान्न आपूर्ति में सहायता मिल सके।

निष्कर्ष एवं सुझाव

उपरोक्त विवेचन से स्पष्ट है कि जनवृद्धि के परिणामस्वरुप एवं अन्य कारकों के प्रभावशाली होने पर कृषि भूमि का क्षेत्रफल अधिकतम हो जाता है एवं अकृषित क्षेत्र न्यूनतम हो जाता है। अध्ययन क्षेत्र में में वर्ष 2016—17 की तुलना में वर्ष 2021—22 में परती भूमि, ऊसर एवं कृषि अयोग्य भूमि, चारागाह भूमि में ह्रास हुआ है जबकि वन भूमि, बंजर भूमि, उद्यान भूमि, शुद्ध कृषि क्षेत्र एवं अन्य उपयोग की भूमि में वृद्धि दर्ज की गयी है जिससे साकारात्मक प्रभाव दृष्टिगत हो रहा है।

वातावरणीय एवं सामाजिक–आर्थिक दशाओं तथा सम्भावित भावी आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए जनपद में विशिष्ट उपयोगी भूमि के निर्धारण की योजना बनाने की आवश्यकता है ताकि भूमि के प्रत्येक खण्ड का सदुपयोग हो सके तथा प्रति इकाई भूमि क्षेत्र से अधिकतम लाभ प्राप्त करने के लिए भूमि उपयोग नियोजन आवश्यक है। अतः अध्ययन क्षेत्र में कषषि अयोग्य भूमि, बंजर भूमि का नियोजन करके भूमि उपयोगी बनाया जा सके जिससे कि कषषि भूमि क्षेत्र का विस्तार हो सके।

सन्दर्भ

1. Barlowe, R. (1961). 'Land Resources Economics : The Political Economy of Rural and Urban Land Resources use'. Prantice Hall: New York. Pg. **228.**
2. Stamp, L.D. (1961). 'The Land of Britain". Its Use and Misuse: London. Pg. **351-387.**
3. Mishra, R.P. (1968). 'Towards Composite Approach of Agricultural Development'. *Indian Geographical Journal.* Vol. XIII. Nos, 1-4. Jan-Dec. 2010.
4. (2021–22). जिला सांख्यिकीय पत्रिका. संत कबीर नगर।